

## रचनाकारों के पते -

- **जगदीश सौरभ-** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड। ईमेल- jagdish.saurabh@gmail.com
- **दिनेश सागर-** दिनेश सागर, कक्ष क्र. - 127, बिरला - 'ब' हॉस्टल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)। ईमेल- dineshsagarbhu19@gmail.com
- **रमेश गोहे-** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ईमेल- rameshggvhiindi@gmail.com
- **डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'-** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र। ईमेल – drsunilsuman@gmail.com
- **इन्दु बारोट (चारण)-** लंदन में संस्कृत, हिन्दी के रूप में अनुवादिका के रूप में कार्यरत। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी, संस्कृत परीक्षा मूल्यांकन विशेषज्ञ। ईमेल - indu.barot@yahoo.in
- **जगदीश पंकज-** कहानीकार व कवि, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में वरिष्ठ प्रबन्धक के पद से सेवानिवृत्त एवं स्वतंत्र लेखन, सोमसदन, 5/41 सेक्टर 2, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश। ईमेल- jagdishjend@gmail.com
- **पायल चतुर्वेदी-** छात्रा, बीए षष्ठ सेमेस्टर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
- **हरिकेश गौतम-** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर. एम. पी. जी. कॉलेज, सीतापुर उत्तर प्रदेश। ईमेल- harikesh.au139@gmail.com
- **अनिष कुमार सिंह-** शोध अध्येता, वानिकी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)।
- **ओम सुनील पंडा-** छात्र, बीए चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
- **मोहन कुमार-** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी। ईमेल- mohankr301@bhu.ac.in
- **डॉ. निकिता जैन-** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली। ईमेल- nkjn989@gmail.com
- **रजनी प्रभा-** शोधार्थी, हिन्दी, द्वारा- कमलेश कुमार सिंह ग्राम-जारंगडीह, कौशल्या स्थान, पो0- ड्योढ, मुजफ्फरपुर। ईमेल- rajni.prabha22@gmail.com
- **संजय कुमार पटेल-** पी-एच. डी., शोध छात्र, हिन्दी विभाग, के.बी.पी.जी. कॉलेज, मिर्जापुर, संबद्ध महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी। ईमेल- incrediblesanjayau@gmail.com
- **डॉ. जया द्विवेदी-** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.बी.पी.जी. कॉलेज, मिर्जापुर, संबद्ध महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी।
- **डॉ. अनिल कुमार-** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। ईमेल- dranilkumar036@gmail.com
- **डॉ. गौरी त्रिपाठी-** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ईमेल- tripathigauri07@gmail.com
- **मुरली मनोहर सिंह-** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ईमेल- muralibhuhindi@gmail.com
- **संगीता-** शोधार्थी, पी-एच.डी., हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। ईमेल - sangeetathaku369@gmail.com
- **हरिशंकर परसाई-** हिन्दी के वरिष्ठ, कथाकार, निबंधकार व व्यंग्यकार थे।
- **ललित श्रीमाली-** 38 A, लेन-1, विनायक नगर, रामगिरि, बडगाँव, उदयपुर, राजस्थान। ईमेल- drlalitkumarshrimali@gmail.com
- **मुक्तेश्वर मुकेश-** कहानीकार, संपादक व समीक्षक, सृजन गृह, शिवपुरी, वार्ड संख्या- 13, सहरसा। ईमेल- kvikramwriter@gmail.com

## विनम्र आग्रह -

1. कविता, कहानी, लघुकथा, उपन्यास अंश सहित सभी साहित्यिक विधाओं की रचनाएं स्वीकार की जाएंगी।
2. एक रचनाकार एक बार में चार से अधिक कवितायें न भेजें।
3. नए विषयों पर आलोचनात्मक लेख, शोध-आलेख व नई पुस्तकों की समीक्षा स्वीकार की जाएंगी। समीक्षकीय पुस्तकों का चयन पत्रिका द्वारा किया जाएगा।
4. लेख व आलोचनात्मक लेख नए विषयों पर एकाग्र हों। उसकी स्थापनाएं स्पष्ट हों। उनमें बेवजह संदर्भों की उबासी न हो।
5. रचनाएं भेजते समय फोटो के साथ अपना संक्षिप्त परिचय अवश्य दें।
6. पुस्तक समीक्षा भेजते समय समीक्षित पुस्तक व लेखक का भी पूरा परिचय अवश्य भेजें। समीक्षकीय पुस्तक छः महीना से अधिक पुरानी न हो।
7. मौलिक रचनाएं ही स्वीकृत होंगी। मौलिकता के लिए एक संक्षिप्त घोषणा-पत्र देना होगा।
8. शोध-पत्र के लिए संदर्भ साँचा (उद्धरण) ए.पी.ए. शैली में स्वीकृत है। पाठ के अंदर पादटिप्पणी अवश्य दें।
9. रचनाएं सिर्फ हिन्दी भाषा (देवनागरी लिपि) में और यूनिकोड (कोकिला या मंगल) फॉन्ट में टाइप की हुई ही स्वीकृत होंगी।
10. लेखकों से अनुरोध रहेगा कि अपने लिखे से पूरी तरह संतुष्ट हो जाने के बाद ही प्रकाशन के लिए भेजें। गुणवत्ता और मौलिकता का जरूर ध्यान रखें। हम बेहद सम्मान के साथ आपको प्रकाशित करेंगे।
11. रचनाएं प्रकाशित करने का अंतिम अधिकार संपादक मण्डल के पास सुरक्षित है। अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए हमें ईमेल ([swanimhindigv@gmail.com](mailto:swanimhindigv@gmail.com)) करें। पत्रिका का प्रत्येक अंक ऑनलाइन माध्यम से पीडीएफ में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगा।

# विभागीय गतिविधियां

## मन करता है कि समुंदर बन जाऊं मैं: प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर। गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के साप्ताहिक साहित्यिक कार्यक्रम साहित्य वार्ता की कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति और कवि प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कविता पाठ किया। उनकी कविताएं जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने प्रेम की अभिव्यक्ति से कविता की शुरुआत करते हुए जीवन की बन जाऊं। समुंदर की गहराई, समुंद्र की शांति। उसी प्रकार की शांति हमें जीवन में आवश्यक होती है। प्रो. चक्रवाल कविता के माध्यम से जीवन के संसार को शांत करने की अपील करते हैं। उनकी कविताओं में आत्मीय आहूत है और प्रेम भी है, नदी भी है, झरने भी हैं और इसी निरंतरता के बीच एक ध्वने की तरह यथार्थ। मानवता को झकझोरती व शर्मसार

स के उपलक्ष्य में आयोजित विशेष व्याख्यान  
12.30 बजे दोपहर, दिनांक : 11/01/20



वक्ता  
तेजेन्द्र शर्मा  
प्रवासी साहित्यकार,  
आयोजक  
हिन्दी विभाग

## सैंट्रल यूनिवर्सिटी: साहित्य वार्ता में कुलपति ने किया कविता पाठ मन करता है कि समुंदर बन जाऊं मैं : प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर। डॉ. पद्मिका, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के साप्ताहिक साहित्यिक कार्यक्रम साहित्य वार्ता की इस कड़ी में कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कविता पाठ किया। उनकी कविताएं जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने प्रेम की अभिव्यक्ति से कविता की शुरुआत करते हुए जीवन की बन जाऊं। समुंदर की गहराई, समुंद्र की शांति। उसी प्रकार की शांति हमें जीवन में आवश्यक होती है। प्रो. चक्रवाल कविता के माध्यम से जीवन के संसार को शांत करने की अपील करते हैं। उनकी कविताओं में आत्मीय आहूत है और प्रेम भी है, नदी भी है, झरने भी हैं और इसी निरंतरता के बीच एक ध्वने की तरह यथार्थ। मानवता को झकझोरती व शर्मसार



**साहित्य वार्ता**  
काव्य-पाठ  
दिनांक : 25/02/2022  
वक्ता : प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल  
आयोजक : हिन्दी विभाग  
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़



**साहित्य वार्ता**  
के अंतर्गत एकल काव्य पाठ  
समय : 2.30 बजे दोपहर, दिनांक : 04/02/2022  
वक्ता : अरविंद चतुर्वेद  
आयोजक : हिन्दी विभाग  
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़  
युट्यूब के लिए लिंक : <https://meet.google.com/cnp-ewtb-yfx>

**साहित्य वार्ता**  
हिन्दी विभाग  
दिनांक : 24/02/2022  
मौलाना विश्वविद्यालय, बिलासपुर  
का साप्ताहिक आयोजन

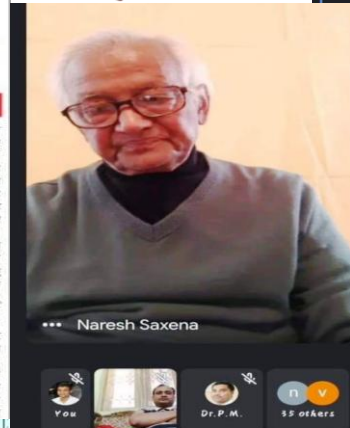


हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

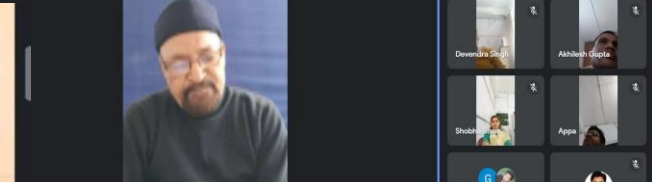
## छायावादी कवियों की जीवनदृष्टि पर वक्ताओं ने रखे विचार

सीयू में पुनर्भार्या कार्यक्रम

बिलासपुर। छायावाद के इस सवाल को चुनने हैं। जब से लेकर आज के समय, साहित्य, संस्कृति व पाठक भी बदल चुके हैं। फिर भी आज तक छायावाद का महत्व जमा का जमा बना हुआ है। इस लेखक गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के पर्यटनवादी के तत्वावधान में हिन्दी पुनर्भार्या कार्यक्रम का विषय 'छायावादी कवियों की जीवन दृष्टि' पर 11 से कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। विभिन्न विभागों के विद्यार्थी अपने विचार रखें। कार्यक्रम के प्रथम वक्ता डॉ. अमरेश प्रधान ने छायावाद की पृष्ठभूमि में पिछली सदी के नवजागरण की चरमोक्ति, संस्कृतिक, वैज्ञानिक और मानवमूल्य माना। विज्ञान, चेत और प्रकृति की कविताओं का हमका देते हुए डॉ. प्रधान ने बताया कि किस तरह छायावाद ने हिन्दी



Naresh Saxena



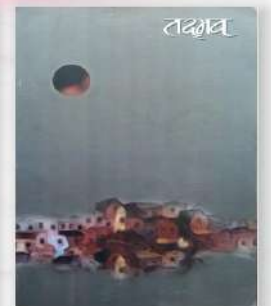
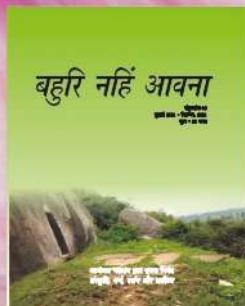
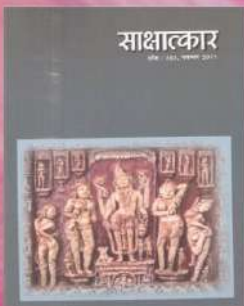
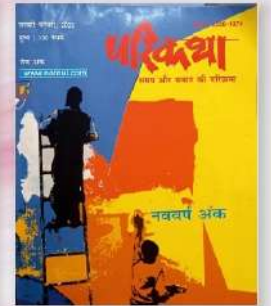
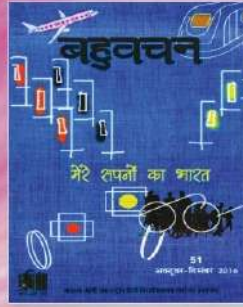
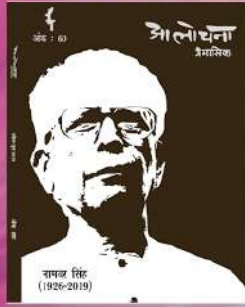
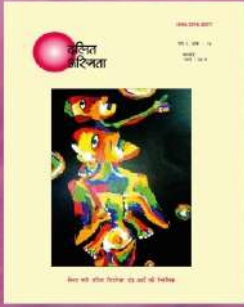
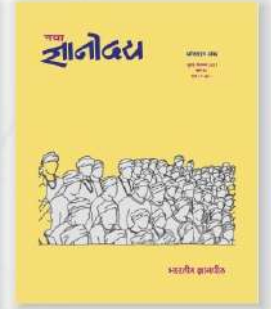
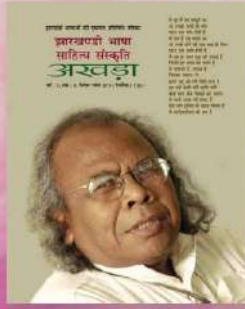
## कथा यूनाइटेड किंगडम के संस्थापक ने प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर रखे विचार अनुभव और स्मृतियों का संसार पीछे छोड़ आए हैं आज के लेखक: शर्मा

बिलासपुर। आज के साहित्य, विचारों में यथा को लेकर के वर्तमान साहित्यिक दृष्टि है। उसका कारण ही है कि आज का कवि या लेखक, कथकलन अपने जहाँ की खोजें करते हैं, जहाँ उनका बचपन बीता है, जहाँ वे अपने लेखक का अनुभव और स्मृति का एक धरा-धरा समुद्र छू रहे हैं। लेखक उसे पीछे छोड़ आए हैं।  
लेखक शर्मा ने लेखन में फैली जा रहे कथकलन साहित्य की अवधारणा का समर्थन देते हुए बताया कि 1998 तक वह के किसी लेखक के साथ अपने साहित्यिक या एक संकेत तक नहीं था, जबकि विचार को नहीं में उनमें कोई लेखक नहीं था जो उन्हें है, जिसके के लेखक साहित्य में प्रवेशित हो चुके हैं। इसके पीछे 'कथकलन' की साहित्यिक शोध, उसके प्रथम साहित्यिक लेखक ने हिन्दी में प्रवेश



अनुभव से उठाए साहित्य के विषय उन्हें ने कहा कि साहित्य में इसी प्रकार, साहित्यिक विचारों का अवधारणा विचार के बिना नहीं चल सकता। इसके बाद उन्होंने अपने लेखन के प्रथम लेखक के साथ अपने साहित्यिक या एक संकेत तक नहीं था, जबकि विचार को नहीं में उनमें कोई लेखक नहीं था जो उन्हें है, जिसके के लेखक साहित्य में प्रवेशित हो चुके हैं। इसके पीछे 'कथकलन' की साहित्यिक शोध, उसके प्रथम साहित्यिक लेखक ने हिन्दी में प्रवेश

## साहित्य : कुछ पते कुछ चिट्ठियां



हिन्दी विभाग

**गुरु घासीदास विश्वविद्यालय**

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

कोनी, बिलासपुर, (छ.ग.), भारत, पिनकोड - 495001